

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 19, संरक्षण और विच्छेद, भाग 3, व्यवस्थित सूत्रीकरण, आश्वासन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मोक्ष पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 19 है, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 3, व्यवस्थित सूत्रीकरण, आश्वासन।

हम मोक्ष के सिद्धांत पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं।

हमने संरक्षण का अध्ययन किया है, कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों को बचाता है। हमने त्रिएकत्व के बारे में अंश देखे, त्रिएकत्व उसे पूरा करने के लिए काम करता है, परमेश्वर के गुण हमें बचाते हैं, और मसीह का कार्य, इसके विभिन्न पहलू, इसी तरह, हमें बचाते हैं। हम दृढ़ता का अध्ययन कर रहे हैं, और यह एक पूरक सत्य होना चाहिए क्योंकि बाइबल जो सिखा रही है वह सुसंगत है, हालाँकि यह स्वयं-स्पष्ट नहीं है कि वे तुरंत कैसे सुसंगत हैं।

लेकिन बाइबल यह भी सिखाती है कि परमेश्वर के लोगों को विश्वास, प्रेम और अब पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए। विश्वासियों को पवित्रता का पीछा करना जारी रखना चाहिए। अगर उन्हें अंततः बचाया जाना है तो ईसाइयों को पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए।

उद्धार विश्वास से होता है, पवित्रता का पीछा करने से नहीं। लेकिन सच्चा उद्धारक विश्वास काम करता है, यह अच्छे कामों को जन्म देता है। उद्धारण, क्योंकि मसीह यीशु में, गलातियों 5, 6, न तो खतना और न ही खतना रहित कुछ भी हासिल करता है।

जो बात मायने रखती है वह है प्रेम के माध्यम से काम करने वाला विश्वास, गलातियों 5, 6। हम इस सत्य को चार अंशों में देखेंगे। सबसे पहले, पौलुस के सबसे प्रसिद्ध विश्वास और कार्य ग्रंथों में, इफिसियों 2:8 से 10, क्योंकि तुम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हो, और यह उद्धार तुम्हारी ओर से नहीं है। यह परमेश्वर का उपहार है, कार्यों से नहीं, ताकि कोई घमंड न करे।

क्योंकि हम उसकी रचना हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया कि हम उनके अनुसार चलें, ताकि हम उन्हें करें, इफिसियों 2:8 से 10। उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है, और यह आरम्भ से अन्त तक परमेश्वर का वरदान है। धर्मी ठहराना कामों से नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा होता, तो बचाए गए लोगों के पास घमण्ड करने का कारण होता, परन्तु ऐसा नहीं है।

रोमियों 3:27-28 का हवाला देते हुए, फिर घमंड कहाँ है? यह बहिष्कृत है। किस तरह के कानून से यह बहिष्कृत है? कामों से? नहीं, इसके विपरीत, कानून से, विश्वास के सिद्धांत से। क्योंकि हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि एक व्यक्ति कानून के कामों के अलावा विश्वास से ही धर्मी ठहराया जाता है, रोमियों 3:27-28।

तो फिर, क्या उद्धार का कामों से कोई लेना-देना नहीं है? उद्धार कामों पर आधारित नहीं है, बल्कि सच्चा उद्धार अच्छे कामों से होता है। इफिसियों 2:10, क्योंकि हम मसीह यीशु में उसके बनाए हुए अच्छे कामों के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें करने के लिए परमेश्वर ने पहले से ही हमारे लिए तैयार किया है। विश्वासी पहले से ही परमेश्वर की नई सृष्टि का हिस्सा हैं।

शब्द पहले से ही बनाया गया है ताकि हम उनमें चल सकें। यह नहीं कहा गया है कि इसने शब्द को फिर से बनाया है, लेकिन इफिसियों 10 के संदर्भ में बनाए गए शब्द का अर्थ बिल्कुल फिर से बनाया गया है। यह ईश्वर की नई सृष्टि के बारे में बात कर रहा है, जो कि हर प्रमुख युगांतशास्त्रीय विषय की तरह, पहले से ही है और अभी तक नहीं है।

अभी तक हम नया आकाश और नई पृथ्वी नहीं देख पाए हैं, लेकिन हम पहले से ही परमेश्वर की छवि में, प्रभु यीशु मसीह की सच्ची छवि में पुनर्जीवित और पुनः निर्मित हो चुके हैं। विश्वासी पहले से ही परमेश्वर की नई सृष्टि का हिस्सा हैं, 2 कुरिन्थियों 5:17, जो केवल नई पृथ्वी में ही दिखाई देगी। इस बीच, परमेश्वर ने हमें अच्छे काम करने के लिए मसीह में पुनः निर्मित किया है।

दरअसल, परमेश्वर ने ये काम हमारे लिए पहले से ही तैयार कर रखे हैं। इसलिए मसीही लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में प्रसन्नता महसूस करते हैं। ऐसा लगता है जैसे मुझे भी ऐसा ही करने के लिए बनाया गया है।

मुझे इसमें बहुत खुशी है। हाँ, ठीक है, आपको ऐसा करने के लिए फिर से बनाया गया था। सच्चे विश्वासी पवित्रता में दृढ़ रहते हैं क्योंकि ऐसा करना उतना ही ईश्वर की इच्छा है जितना कि मुफ्त उद्धार।

मैं कह सकता हूँ कि यह उतना ही उसका है, न केवल उसकी इच्छा आज्ञा दी गई है, बल्कि यह उसकी इच्छा है। यह उसकी योजना है कि हम अस्तित्व में आने से पहले ही वही काम करें। दूसरे अनुच्छेद में, पॉल फिर से जोर देता है कि औचित्य कार्यों पर आधारित नहीं है, बल्कि अनिवार्य रूप से अच्छे कार्यों की ओर ले जाता है।

पुनर्जन्म और औचित्य में मानवीय उपलब्धि शामिल नहीं है, बल्कि ये सब परमेश्वर की कृपा है। तीतुस 3:4 से 7, लेकिन जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की दया और मानवजाति के प्रति उसके प्रेम ने हमें बचाया, तो उसने हमें धार्मिकता के कामों के द्वारा नहीं, जो हमने किए थे, बल्कि उसकी दया के अनुसार, पवित्र आत्मा के द्वारा पुनर्जन्म और नवीनीकरण के स्नान के द्वारा बचाया। उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अपनी आत्मा को बहुतायत से उंडेला, ताकि हम उसके अनुग्रह से न्यायसंगत ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के साथ वारिस बनें।

दूसरा, मेरा मतलब है, तीतुस, क्षमा करें, तीतुस 3:4 से 7, उद्धार हमारे धार्मिकता के कामों के कारण नहीं है, बल्कि परमेश्वर की दया, प्रेम, दया और अनुग्रह के कारण है, जो शब्द मैंने अभी पढ़े गए अंश में दिखाई देते हैं। परिणामस्वरूप, हम बच जाते हैं, यानी पुनर्जन्म, न्यायोचित और

अनंत जीवन के वारिस। पॉल इससे अधिक स्पष्ट नहीं हो सकता था कि उद्धार कामों से नहीं बल्कि विश्वास से होता है।

या शायद वह हो सकता है। गलातियों 2:16 में, वह इसे तीन बार कहता है, नकारात्मक और सकारात्मक रूप से। लेकिन वैसे भी, यहाँ यह बहुत स्पष्ट है।

साथ ही, वह यह भी स्पष्ट करता है कि मुफ्त औचित्य का परिणाम ईश्वरीय जीवन में होता है। उपरोक्त आयतों के तुरंत बाद, हम पढ़ते हैं, उद्धृत करते हैं, यह कथन विश्वसनीय है। मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों पर जोर दो, पौलुस अपने शिष्य तीतुस को लिखता है, ताकि जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं वे अपने आप को अच्छे कार्यों में समर्पित करने के लिए सावधान रहें।

ये सभी के लिए अच्छे और लाभदायक हैं। पद 8, यारब्रॉ, अपने द लेटर्स टू टिमोथी एंड टाइटस, पिलग्रिम न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री, पृष्ठ 552 में, यारब्रॉ पॉल के लिए ईसाई जीवन में अच्छे कार्यों के महत्व पर प्रकाश डालता है। उद्धरण, तीतुस 3:8 में ये बातें अच्छे कार्य हैं जो पॉल टिमोथी से आग्रह कर रहे हैं कि यह सुनिश्चित करें कि क्रेते के द्वीप में क्रेटन विश्वासी तीतुस के सेवकों को उच्च मूल्य दें।

उनके व्यवहार से न केवल ऐसे कार्य करने वालों को लाभ होगा, बल्कि दुनिया में उन लोगों को भी लाभ होगा जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया को गवाही देने के लिए बुलाया है। क्योंकि हर कोई लोगों के लिए है, इसलिए हर कोई दूसरों के लिए है। एंथ्रोपोइस, एक अभिव्यक्ति जिसमें सभी शामिल हैं। जो लोग दावा करते हैं कि चर्च को तुच्छ समझने का प्रलोभन दिया जा सकता है, पद 3, उनमें से हैं जिन्हें पॉल ने ईसाइयों से समाज में उनके शानदार आचरण के द्वारा आशीर्वाद देने के लिए कहा है। तीतुस 3 की पद 1 और 2।

तीसरा इब्रानियों में एक पाठ है, तीसरा मार्ग विश्वासियों को पवित्रता में दृढ़ रहने की आवश्यकता को दर्शाता है। इब्रानियों 12 में ईश्वरीय अनुशासन के रूप में उत्पीड़न को सहने के लिए पाठकों को आदेश देने वाले मार्ग के बाद, लेखक कहता है, इब्रानियों 12:14, सभी के साथ शांति का पीछा करो और पवित्रता का पीछा करो जिसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देखेगा। इब्रानियों 12:14 पाठकों को सभी के साथ शांति की तलाश करने की आज्ञा देता है।

लेखक ने ग्रीस में शांति को पहले स्थान पर रखा है। संदर्भ में, यह विश्वास के समुदाय के भीतर शांति को संदर्भित करता है। पीछा करना एक मजबूत क्रिया है और सद्भाव और पवित्रता के संबंध में पाठक की ओर से सक्रिय प्रयास को दर्शाता है।

शांति का पीछा करो और पवित्रता का पीछा करो। वास्तव में, पीछा करना शब्द दोहराया नहीं गया है, लेकिन इसे दोनों क्रियाओं से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। पाठकों को पवित्रता का पीछा करने का आदेश दिया गया है और चेतावनी दी गई है कि जो लोग इसमें कमी रखते हैं, वे ईश्वर के दर्शन, ईश्वर के अंतिम दर्शन का अनुभव करने में असफल रहेंगे जो देखने वालों को खुशी से भर देता है।

एफएफ ब्रूस सटीक है, उद्धरण, पवित्रता जिसके बिना कोई भी व्यक्ति प्रभु को नहीं देख पाएगा, जैसा कि शब्द स्वयं स्पष्ट करते हैं, ईसाई जीवन में कोई वैकल्पिक अतिरिक्त नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो इसके सार से संबंधित है। यह हृदय में शुद्ध है और कोई नहीं बल्कि वे ही हैं जो ईश्वर को देखेंगे। मैथ्यू 5:8।

यहाँ, जैसा कि पद 10 में है, यह जीवन की व्यावहारिक पवित्रता है जिसका अर्थ उन चीज़ों के विपरीत है जिनके विरुद्ध आगे के पदों में चेतावनी दी गई है। उद्धरण बंद करें। एफएफ ब्रूस की इब्रानियों पर टिप्पणी। इब्रानियों के लिए पत्र, नए नियम पर नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी।

विश्वासियों को परमेश्वर के अंतिम राज्य में प्रवेश करने के लिए पवित्रता में अंत तक दृढ़ रहना चाहिए। अगला अंश हमें सिखाता है कि उसकी पवित्रता यह है कि यह पवित्रता पाप रहित पूर्णता नहीं है, बल्कि इसमें पाप की स्वीकारोक्ति शामिल है।

चौथा अनुच्छेद जो विश्वासियों से पवित्रता की मांग करता है, यदि वे अंततः बचाए जाना चाहते हैं, तो यह पहले यूहन्ना में है। यह अनुच्छेद पवित्रता में दृढ़ता के अध्ययन में संतुलन जोड़ता है। यह उद्धार के लिए ऐसी दृढ़ता की आवश्यकता पर उतनी ही दृढ़ता से जोर देता है, जितनी कि शास्त्र में कहीं भी।

1 यूहन्ना 1:5 और 6. जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यही है: परमेश्वर ज्योति है, और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।

यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर भी अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य का पालन नहीं करते। 1 यूहन्ना 1:5 और 6. 1 यूहन्ना 2:3 से 5.

इस से हम जान लेते हैं कि हम उसे जानते हैं। यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूँ और फिर भी उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं। परन्तु जो कोई उसके वचन पर चलता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है।

1 यूहन्ना 2:3 से 5. 1 यूहन्ना 2:29. यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो यह भी जानते हो।

जो कोई धर्म के काम करता है, वह उसी से उत्पन्न हुआ है। 1 यूहन्ना 2:29. 1 यूहन्ना 3:6 से 8 और फिर पद 10.

जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, न जाना है। हे बालकों, कोई तुम्हें धोखा न दे।

जो धर्म के काम करता है, वह धर्मी है, क्योंकि वह स्वयं भी धर्मी है। जो पाप करता है, वह शैतान से है, क्योंकि शैतान ने आरम्भ से ही पाप किया है। श्लोक दस।

इस तरह परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान स्पष्ट हो जाती है। जो कोई सही काम नहीं करता, वह परमेश्वर का नहीं है, खासकर वह जो अपने भाई या बहन से प्रेम नहीं करता। 1 यूहन्ना 3:6 से 8 और फिर 10.

इस प्रकार 1 यूहन्ना विश्वासियों पर बहुत जोर देता है कि वे अपने विश्वास के अनुसार जिंएँ। उद्धृत अंशों में इसका तात्पर्य पाप को ना कहना और पवित्रता को हाँ कहना है। वास्तव में, ऊपर दिए गए अंशों की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि ईसाई कभी पाप नहीं करते।

हालाँकि, 1 यूहन्ना 1:5 से 2:2 के आधार पर ऐसी व्याख्या गलत होगी। इस पूरे अंश का आधार पाँचवाँ पद है। 1 यूहन्ना के पूरे भाग का आधार अध्याय 1 का पद 5 है।

परमेश्वर प्रकाश है, और उसमें बिलकुल भी अंधकार नहीं है। परमेश्वर की पवित्रता पूर्ण है और इस तथ्य से कुछ निहितार्थ निकलते हैं। पहले यूहन्ना एक, छः से दो, एक का हवाला देते हुए।

वे एकता हैं, और संतुलन देखना अच्छा है क्योंकि जॉन एक चीज़ को दूसरे के बगल में बहुत मददगार तरीकों से रखता है। बाइबल एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तक नहीं है, लेकिन मैं कहता हूँ कि कुछ जगहों पर, यह एक व्यवस्थित प्रवृत्ति दिखाती है। तो, यह यहाँ है।

आम तौर पर, लेखक, बाइबल का लेखक जिसके पीछे पवित्र आत्मा है, परमेश्वर के सत्य की रूपरेखा को समझाने के लिए योग्यता की आवश्यकता को देखता है, ताकि पाठक ईसाई धर्मशास्त्र या नैतिकता को गलत न समझें। यदि हम 1 यूहन्ना 1:6 कहते हैं, तो हम उसके साथ संगति करते हैं और फिर भी अंधकार में चलते हैं, तो हम झूठ बोल रहे हैं और सत्य का अभ्यास नहीं कर रहे हैं। यदि हम ज्योति में चलते हैं जैसा कि वह स्वयं ज्योति में है, तो हम एक दूसरे के साथ संगति करते हैं, और यीशु के पुत्र का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है।

यदि हम कहें कि हम में कोई पाप नहीं है, तो हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और हमारे अन्दर सत्य नहीं है। यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह हमें क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हमारे अन्दर नहीं है।

मेरे प्यारे बच्चों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो, लेकिन अगर कोई पाप करे, तो हमारे पास पिता यीशु मसीह के पास एक सहायक है, जो धर्मी है। ये आयतें मुझे अलग-थलग कर देती हैं। ये आयतें एक कथन के बीच बारी-बारी से आती हैं जो सैद्धांतिक या व्यावहारिक रूप से पाप को नकारती हैं और दो कथन जो पाप को स्वीकार करते हैं या पवित्र जीवन की सराहना करते हैं।

1:6 एक कथन जो व्यावहारिक रूप से पाप को नकारता है।

1:7 एक कथन जो पवित्र जीवन की सराहना करता है।

1:8 एक कथन जो सैद्धांतिक रूप से पाप से इनकार करता है।

1:9 एक कथन जो पाप को स्वीकार करता है।

1:10 एक कथन जो व्यावहारिक रूप से पाप को अस्वीकार करता है।

2:1 एक कथन जो पवित्र जीवन की सराहना करता है और पाप को स्वीकार करता है।

ये कथन कई काम पूरा करते हैं। वे दिखाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में पाप से घृणा करता है। वह उन्हें पवित्र होने की आज्ञा देता है जैसे वह स्वयं पवित्र है। लैव्यव्यवस्था 11:44; 19:2; 1 पतरस 1:16 से तुलना करें।

पवित्रता वैकल्पिक नहीं है, बल्कि यह विश्वासी होने का एक अभिन्न अंग है। ईसाइयों के लिए सैद्धांतिक या व्यावहारिक रूप से पाप को नकारना संभव है, जो दोनों ही विनाशकारी हैं। ऊपर दी गई सूची में ईश्वर की कृपा, मसीह के क्रूस और क्षमा के कथनों को छोड़ दिया गया है, भले ही, उनके सर्वोत्तम ज्ञान के अनुसार, ईसाई पाप नहीं कर रहे हैं, वे खुद को नहीं बचाते हैं, लेकिन मसीह का प्रायश्चित उनके लिए काम आता है, अर्थात्, यीशु के पुत्र का खून हमें सभी पापों से शुद्ध करता है, श्लोक 7। दूसरे शब्दों में, मैंने इन बातों को छोड़ दिया, लेकिन वे अंश में हैं। मैंने उन्हें यह दिखाने के लिए छोड़ दिया कि दोनों, क्रूस और क्षमा के बीच टकराव, पाप नहीं है।

यह पाप नहीं है, लेकिन यह सैद्धांतिक या व्यावहारिक रूप से पाप को नकारने और ईश्वर द्वारा ईश्वरीय जीवन की प्रशंसा करने के बीच है जो आगे-पीछे होता रहता है। जब वे अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो ईश्वर हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करने के लिए विश्वासयोग्य और धर्मी है, पद 9। जब विश्वासी ठोकर खाते हैं और गिरते हैं, तब भी उनके पास पिता के पास एक अधिवक्ता होता है, यीशु मसीह, जो धर्मी है, 2 :1, जिसने उन सभी के लिए प्रायश्चित किया जो विश्वास करते हैं, पद 2। इस प्रकार, 1 यूहन्ना 1:6-2.1 पत्र में स्पष्ट पूर्णतावादी ग्रंथों की व्याख्या को योग्य बनाता है। पवित्रता में दृढ़ता के प्रमुख पहलुओं में पाप को स्वीकार करना, सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से, ईसाई जीवन के एक सामान्य हिस्से के रूप में पाप को स्वीकार करना और हमें बचाने और बनाए रखने के लिए ईश्वर की कृपा और मसीह के प्रायश्चित बलिदान पर भरोसा करना शामिल है।

परमेश्वर अपने लोगों और संरक्षण की रक्षा करता है। विश्वासियों को विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए। आश्वासन, परमेश्वर द्वारा अपने संतों का संरक्षण, और विश्वास, प्रेम और पवित्रता में उनका दृढ़ रहना आश्वासन और धर्मत्याग सहित अन्य सिद्धांतों को प्रभावित करता है।

हम संक्षेप में उन पर बारी-बारी से चर्चा करेंगे। आश्वासन अंतिम उद्धार में विश्वास है। परमेश्वर अपने लोगों को तीन प्राथमिक तरीकों से कृपापूर्वक आश्वस्त करता है।

उनके वचन में उद्धार के वादे सबसे महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यह अकेला नहीं है। पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही और उनके लोगों के जीवन में आध्यात्मिक विकास। मैं आपको अपनी पुस्तक, *द एश्योरेंस ऑफ़ साल्वेशन, बाइबिलिकल होप फॉर अवर स्ट्रगल्स*, जॉर्डरवन 2019 में एक विस्तृत विवरण की ओर इशारा करता हूँ।

वचन के द्वारा आश्वासन। यहाँ शीर्षक दिए गए हैं। आत्मा के द्वारा आश्वासन।

आध्यात्मिक विकास के माध्यम से आश्वासन। वचन के माध्यम से आश्वासन। सुसमाचार के वादे यहीं हैं।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए, यूहन्ना 3:16। जब लोग पुत्र पर भरोसा करते हैं कि वह उन्हें अनन्त जीवन देगा, तो उन्हें उद्धार में विश्वास प्राप्त होता है। परमेश्वर का विश्वसनीय वचन उन सभी के लिए आश्वासन का मूल स्रोत है जो उसके उद्धार संदेश पर विश्वास करते हैं। 1 यूहन्ना भी मसीह में विश्वास में आश्वासन का आधार या आधार देता है।

उद्धारण, और यह एक गवाही है। परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है।

जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है। 1 यूहन्ना 5:11 और 12. यूहन्ना संपन्न और वंचित लोगों के बीच अंतर बताता है।

उनका भेद सुंदरता, बुद्धि या ताकत पर आधारित नहीं है, तीन चीजें जिन्हें हम बहुत महत्व देते हैं। बल्कि, उनका भेद इस बात पर आधारित है कि मसीह विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उद्धारकर्ता है या नहीं। परमेश्वर उन लोगों को अनन्त जीवन का आश्वासन देता है जिनके पास परमेश्वर का पुत्र है।

संरक्षण के जिन अंशों का हम अध्ययन करते हैं, वे भी यही सिखाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को वचन के माध्यम से आश्वासन देता है। यहाँ यूहन्ना 10:26 से कुछ अंश दिए गए हैं, मैं अपनी भेड़ों को अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी। इसलिए, रोमियों 8:1 उन लोगों की निंदा नहीं करता जो मसीह यीशु में हैं।

रोमियों 8:38-39, क्योंकि मुझे यकीन है, पौलुस ने लिखा कि न तो मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न शासक, न वर्तमान, न भविष्य, न शक्तियाँ, न ऊँचाई, न गहराई, न कोई और सृजनात्मक वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है। इब्रानियों 7:24-25, यीशु अपने पुरोहिती पद को स्थायी रूप से धारण करता है क्योंकि वह हमेशा बना रहता है। परिणामस्वरूप, वह उन लोगों को पूरी तरह से बचाने में सक्षम है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के निकट आते हैं क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहता है।

इब्रानियों 7:24-25, आश्वासन मुख्य रूप से वचन के माध्यम से होता है, लेकिन यह एकमात्र तरीका नहीं है जिससे परमेश्वर हमें आश्वासन देता है। पवित्र आत्मा के माध्यम से आश्वासन। हालाँकि परमेश्वर का वचन प्राथमिक तरीका है जिससे परमेश्वर अपने लोगों को आश्वस्त करता है, लेकिन यह एकमात्र तरीका नहीं है।

परमेश्वर विश्वासियों के भीतर काम करने वाली अपनी आत्मा के द्वारा अंतिम उद्धार का विश्वास भी प्रदान करता है। रोमियों इस सत्य का प्राथमिक गवाह है, लेकिन 1 यूहन्ना भी इसकी गवाही देता है। 1 यूहन्ना 4:13, इस तरह हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं और वह हम में।

उसने हमें अपनी आत्मा दी है। 1 यूहन्ना 4:3, 1 यूहन्ना 3:24, और इस तरह और जिस तरह से हम जानते हैं कि वह हम में रहता है वह आत्मा से है। उसने हमें दिया है।

1 यूहन्ना 5:6-10, यीशु मसीह, वह वही है जो पानी और लहू से आया - यह उसके बपतिस्मा और क्रूस का संदर्भ है। केवल पानी से नहीं, वे, मैं थोड़ी देर में समझाऊँगा, बल्कि पानी और लहू से आए।

और आत्मा ही गवाही देती है, क्योंकि आत्मा ही सत्य है, क्योंकि गवाही देनेवाले तीन हैं: आत्मा, और पानी, और लोहू। और ये तीनों एक ही बात कहते हैं।

अगर हम मानवीय गवाही को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर की गवाही उससे भी बड़ी है क्योंकि यह परमेश्वर की गवाही है जो उसने अपने पुत्र के बारे में दी है। जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास यह गवाही अपने भीतर होती है। 1 यूहन्ना 5:6-10, पहले दो पाठ केवल यह बताते हैं कि पवित्र आत्मा विश्वासियों में यह जानने में भूमिका निभाता है कि वे मसीह के साथ एक हैं।

तीसरे पाठ में मसीह के तीन गवाहों में से एक आत्मा शामिल है। यूहन्ना यीशु के जीवन की शुरुआत और अंत में संकेत चिन्ह लगाता है। पानी, यीशु का बपतिस्मा, और खून, उसका क्रूस पर चढ़ना।

आत्मा यूहन्ना 17:17 और पुत्र, यूहन्ना 14:6 जैसे ऐतिहासिक चिह्नों की गवाही देती है। आत्मा सत्य है। 1 यूहन्ना 5:6, लोगों को उद्धार पाने के लिए, उन्हें यीशु के बारे में परमेश्वर की गवाही पर विश्वास करना चाहिए। जब कोई ऐसा करता है, तो उसके पास, उद्धारण, अपने भीतर यह गवाही होती है, उद्धारण बंद करें, क्योंकि उसके हृदय में आत्मा की गवाही होती है।

1 यूहन्ना 5:10, रोमियों ने पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही के बारे में दो सबसे उत्कृष्ट अंश प्रस्तुत किए हैं। पौलुस अंतिम उद्धार की आशा की प्रशंसा करता है जिसका आनंद विश्वासी इसलिए लेते हैं क्योंकि मसीह ने उन्हें परमेश्वर के साथ मिला दिया है। उनकी आशा परमेश्वर के वचन और उनके जीवन में उसके काम पर टिकी है, रोमियों 5:1-4। यदि उनकी आशा सुरक्षित है, तो मसीहियों को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पौलुस समझता है और उद्धृत करता है कि यह आशा हमें निराश नहीं करेगी, अंतिम उद्धार की यह आशा, महिमा की यह आशा।

यह हमें निराश नहीं करेगा क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा डाला गया है, जो हमें दिया गया है, रोमियों 5.5। आत्मा हमें आंतरिक रूप से आश्वस्त करती है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। इस प्रकार वह वचन के माध्यम से दिए गए आश्वासन को पूरा करता है। वचन और आत्मा मिलकर विश्वासियों के इस विश्वास को मजबूत करते हैं कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और अंत तक उन्हें बचाए रखेगा।

पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही पर टेक्सटस क्लासिकस रोमियों 8:16 है। संदर्भ ईश्वर द्वारा विश्वासियों को अपनाने से संबंधित है। ईश्वर के बच्चे पहचाने जा सकते हैं। आप उन्हें चुन सकते हैं, उद्धृत कर सकते हैं, क्योंकि इस ईश्वर की आत्मा द्वारा निर्देशित सभी लोग ईश्वर के पुत्र हैं, रोमियों 8:14। पिता अपने बच्चों को भय से मुक्त करता है जब वह उन्हें पवित्र आत्मा देता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि, उद्धरण, गोद लेने की भावना उन्हें चिल्लाने में सक्षम बनाती है, उद्धरण, अब्बा, पिता, श्लोक 15। अब्बा बच्चों की भाषा नहीं है, बल्कि बच्चों द्वारा अपने पिता के लिए स्नेहपूर्वक कहा जाने वाला शब्द है। यहाँ इसका अर्थ है पिता, पिता।

शब्द रोना भावनात्मक तीव्रता को दर्शाता है और साथ ही साथ यह ESV, NASB, और CSB, क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल द्वारा इंगित किया गया है, जो वाक्य को विस्मयादिबोधक चिह्न के साथ विरामित करता है। शब्द रोना, आत्मा हमें पिता, पिता पुकारने में सक्षम बनाती है। आत्मा न केवल खोए हुए लोगों को सच्चाई में परमेश्वर को पिता कहने के लिए सशक्त बनाती है, बल्कि वह विश्वासियों को पिता के प्रेम के बारे में आंतरिक रूप से आश्वस्त भी करती है, उद्धरण, आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं, श्लोक 16।

परमेश्वर अपने वचन में अपने बच्चों से वादे करके उन्हें अपने प्रेम का बाहरी आश्वासन देता है। वह उन्हें आंतरिक रूप से भी आश्वासन देता है कि पवित्र आत्मा उनकी मानवीय आत्माओं के साथ गवाही देता है कि परमेश्वर उनका पिता है और वे उसके प्रिय बच्चे हैं। क्योंकि वे बच्चे हैं, इसलिए वे भी, उद्धरण, परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह-वारिस हैं, उद्धरण बंद करें, यदि उनका विश्वास सच्चा है।

जो लोग मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मानते हैं और उसकी मृत्यु और पीड़ा में उसके साथ जुड़े हुए हैं, वे महिमा में भी उसके साथ जुड़ेंगे, रोमियों 8:17। परमेश्वर सिर और हृदय दोनों की सेवा करता है। कई इंजीलवादी अपने विश्वास में शास्त्र को सर्वोच्च स्थान देने के अपने उत्साह में, हृदय को कमतर आंकते हैं, जैसा कि मू ने रोमियों 8:16 में क्रिया का उल्लेख करते हुए, अपने महान रोमन टिप्पणी, पृष्ठ 502, उद्धरण में देखा, क्रिया का उपयोग करते हुए, पॉल ने जोर दिया कि पिता के रूप में परमेश्वर के बारे में हमारी जागरूकता तर्कसंगत विचार या केवल बाहरी गवाही से नहीं आती है, महत्वपूर्ण शब्द, बल्कि एक सच्चाई से गहराई से महसूस की जाती है और तीव्रता से अनुभव की जाती है।

यदि कुछ ईसाई केवल भावनाओं के आधार पर उद्धार के अपने आश्वासन को आधार बनाने में गलती करते हैं, तो कई अन्य लोग केवल तथ्यों और तर्कों के आधार पर इसे आधार बनाने में गलती करते हैं। वास्तव में, यहाँ पौलुस जो कहता है, वह इस बात पर सवाल उठाता है कि क्या कोई व्यक्ति भावनाओं को प्रभावित किए बिना परमेश्वर की आत्मा के गोद लेने का वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकता है। 21 वर्षीय के रूप में परमेश्वर ने मुझे अपने पास लाया, जब मुझे बाइबल पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया, और मैंने इसे निगल लिया। मुझे विश्वास था कि यह एक संदेश, परमेश्वर का वचन था, और मैंने सुसमाचार पर विश्वास किया।

और मेरे अंदर एक अकल्पनीय आंतरिक आश्वासन की भावना थी जिसके बारे में म्यू बात कर रहा है। मैं यीशु के बारे में, अगर आप कहें तो, महीनों तक सुसमाचार के बारे में बहुत उत्साहित था। और मैं इतना समझदार था कि भगवान की कृपा से यह जान पाया कि यह सामान्य ईसाई जीवन नहीं था।

और यह वह नहीं था जिस पर मैं भरोसा कर रहा था, लेकिन हाँ, यह अच्छा था। और यह बहुत उत्साहजनक था। वचन को पढ़ने से, विशेष रूप से पॉल के पत्रों को पढ़ने से, और उद्धार के संदेश को समझने से मुझे एक अद्भुत आश्वासन की अनुभूति हुई, लेकिन साथ ही यह अजीब आंतरिक विश्वास भी था, जिसने बाइबल के साथ मिलकर, मेरे लिए दिन को संभाला और मुझे कुछ कठिन दौर से निकाला।

वचन के माध्यम से आश्वासन, भीतर की आत्मा के माध्यम से आश्वासन, आध्यात्मिक विकास के माध्यम से आश्वासन। परमेश्वर अपने लोगों को उनके वचन में संरक्षण, उद्धार और संरक्षण के वादों के माध्यम से, उनके हृदयों में उनकी आत्मा की गवाही के माध्यम से, और उनके जीवन में उनके कार्य के माध्यम से आश्वासन के साथ आशीर्वाद देता है। हम तीन अंशों की सहायता से इस अंतिम बिंदु की जाँच करेंगे।

सबसे पहले, लूका 8:11 से 15, परमेश्वर के वचन के अपर्याप्त और पर्याप्त ग्रहण के बीच अंतर करता है। यीशु ने बोने वाले और बीज का दृष्टांत बताया। कुछ बीज रास्ते में गिरे और पक्षियों ने उन्हें खा लिया।

कुछ बीज चट्टान पर गिरे जहाँ वे अंकुरित हुए लेकिन नमी के बिना सूख गए। कुछ काँटों के बीच गिरे जिन्होंने उन्हें दबा दिया। बीज परमेश्वर का वचन है।

पहले तीन प्रकार की भूमि वे हैं जो वचन के श्रोता हैं जो वचन को सही मायने में ग्रहण नहीं करते ताकि स्थायी फल उत्पन्न कर सकें। केवल अंतिम प्रकार की भूमि सच्चे विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करती है, जैसा कि यीशु ने उनका वर्णन किया है। उद्धारण, लेकिन अच्छी भूमि में बीज, ये वे हैं जो वचन को एक ईमानदार और अच्छे दिल से सुनकर उसे थामे रहते हैं और धीरज से फल उत्पन्न करते हैं।

लूका 8:15. यीशु के अनुयायियों का विश्वास जो अपने विश्वास में बढ़ रहे थे, इन शब्दों को सुनकर बढ़ जाएगा। दूसरा, आश्वासन को आध्यात्मिक विकास से जोड़ने वाला दूसरा अंश पतरस द्वारा अपने पाठकों को ईश्वरीय जीवन जीने की चुनौती है।

वह उन्हें परमेश्वर की सामर्थ्य और वचन में जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक हर चीज़ के प्रावधान की याद दिलाता है। 2 पतरस 1:3, और 4। फिर वह उन्हें उद्धृत करने के लिए प्रोत्साहित करता है, अपने विश्वास को भलाई से, भलाई को ज्ञान से, ज्ञान को संयम से, संयम को धीरज से, धीरज को भक्ति से, भक्ति को भाईचारे की प्रीति से, और भाईचारे की प्रीति को प्रेम से बढ़ाने का हर संभव प्रयास करें। 2 पतरस 1, आयत 5 से 7। पतरस अपने पाठकों से वादा करता है कि अगर वे इन गुणों में बढ़ रहे हैं तो वे उपयोगी और फलदायी होंगे।

इसके अलावा, पद 8 में कहा गया है कि इन गुणों की कमी से व्यक्ति का उद्धार न होने का प्रमाण मिलता है। 2 पतरस 1:9। हमारे उद्देश्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पतरस के अगले शब्द हैं। इसलिए, भाइयों और बहनों, अपने बुलावे और चुनाव की पुष्टि करने के लिए हर संभव प्रयास करें, क्योंकि यदि आप ये काम करते हैं, तो आप कभी भी ठोकर नहीं खाएंगे।

क्योंकि इस प्रकार से हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में प्रवेश तुम्हारे लिए बहुतायत से प्रदान किया जाएगा। 2 पतरस 1:10 और 11. पौलुस की तरह ही पतरस में उनका बुलावा, सुसमाचार के माध्यम से मसीह के पास उन्हें प्रभावशाली ढंग से बुलाना है।

उनका चुनाव परमेश्वर द्वारा उन्हें संसार की नींव रखने से पहले उद्धार के लिए चुना जाना है। बेशक, उनका बुलावा और चुनाव परमेश्वर को पता है जिसने उन्हें चुना और बुलाया है। पतरस प्रार्थना करता है कि उसके पाठक का यह भरोसा बढ़े कि परमेश्वर ने उन्हें चुना और बुलाया है।

वह चुनाव से पहले बुलावे को महत्व देता है क्योंकि इसी तरह से वे प्रभु को जान पाए। उन्होंने परमेश्वर द्वारा उन्हें चुने जाने के लिए अपने तरीके से तर्क नहीं किया। बल्कि, जब परमेश्वर ने उन्हें प्रभावी ढंग से बुलाया तो उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया।

यह उनके बुलावे के द्वारा ही था कि उन्हें अपने चुनाव का पता चला। 1 थिस्सलुनीकियों 1:4 और 5 की तुलना करें। हार्वे और टाउनर ने एक टिप्पणी में अपने पाठकों को पतरस का संदेश दिया है। उद्धारण, वह हमारे सामने यह वादा रखता है कि इस तरह की वृद्धि का पीछा करके, वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों के बीच अपने स्थान की वास्तविकता की पुष्टि करेंगे।

पद 10, आध्यात्मिक रूप से नुकसानदायक उलटफेर से बचें, पद 10, और अनंत जीवन की महिमा का आनंद लेने की अपनी क्षमता को समृद्ध करें। पद 11, रॉबर्ट हार्वे और फिलिप टाउनर, दूसरा पतरस और यहूदा, अंतर-विश्वविद्यालय, और यह पृष्ठ 51 है। इसलिए, परमेश्वर के लोग अपने आश्वासन को मजबूत करते हैं क्योंकि वे परमेश्वर और जीवन के उन गुणों का अनुसरण करते हैं जो वह उनके लिए चाहता है।

तीसरा, 1 यूहन्ना इस तथ्य की सशक्त गवाही देता है कि परमेश्वर अपने प्रति आज्ञाकारिता में वृद्धि के साथ आश्वासन को जोड़ता है, जैसा कि उसका रिवाज है। यूहन्ना इस सत्य को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से सिखाता है। उद्धारण, 1 यूहन्ना 2:3 से 6, इस तरह हम जानते हैं कि हम उसे जानते हैं यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं। परन्तु जो उसके वचन पर चलता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध होता है। इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें हैं।

जो कहता है कि वह उसमें बना रहता है, उसे वैसे ही चलना चाहिए जैसे यीशु चला। 1 यूहन्ना 2:3 से 6, सकारात्मक रूप से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके, मसीहियों को उसे जानने का आश्वासन मिलता है। इसके विपरीत, आयत 3, उसकी आज्ञाओं का पालन न करते हुए उसे जानने का दावा करना एक बहुत बुरा संकेत है।

पद 4, सकारात्मक रूप से फिर से, परमेश्वर का प्रेम विश्वासियों में अपना लक्ष्य प्राप्त करता है जब वे उसके वचन का पालन करते हैं और इस प्रकार अपने आश्वासन को मजबूत करते हैं। पद 5, संक्षेप में, जो लोग मसीह के साथ एकता में होने का दावा करते हैं उन्हें उसके उदाहरण का अनुसरण करते हुए जीना चाहिए। 1 यूहन्ना 2, 6, आध्यात्मिक विकास के माध्यम से आश्वासन पर हमारा जोर गलत समझा जा सकता है।

किसी भी बिंदु पर ईसाई जीवन एक स्व-सहायता कार्यक्रम नहीं है। विश्वासी पूरे समय सक्रिय रहते हैं और अंत में बचाए जाने के लिए उन्हें विश्वास, प्रेम और पवित्रता में दृढ़ रहना चाहिए। लेकिन वे स्वतंत्र रूप से सक्रिय नहीं होते हैं।

ईश्वर अपने बच्चों के माध्यम से हर कदम पर काम करता है, जिसमें आध्यात्मिक विकास भी शामिल है। हम वास्तव में विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बढ़ते हैं, लेकिन ईश्वर उस विकास को सक्षम बनाता है। हम इसे त्रिविवादी व्यक्तियों में से प्रत्येक के लिए देखते हैं।

हम, उद्धरण, भय और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करते हैं। फिलिप्पियों 2:12 और 13. क्योंकि यह परमेश्वर ही है, जो पिता है, जो अपने भले उद्देश्य के लिए इच्छा और कार्य दोनों के लिए हम में काम कर रहा है।

हम उस उद्धार को कार्यान्वित करते हैं जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर किया है, और हम इसे श्रद्धापूर्वक करते हैं, यहाँ तक कि भय और काँप के साथ भी, क्योंकि यह उद्धार है जो परमेश्वर हमारे अन्दर कर रहा है, ताकि हम उसकी इच्छा के अनुसार इच्छा करें और कार्य करें। हमारे अच्छे विचार भी अंततः परमेश्वर को महिमा देते हैं। हम सच्ची दाखलता, यीशु मसीह में बने रहते हैं जब वह हमें याद दिलाता है, उद्धरण, तुम मुझसे अलग होकर कुछ नहीं कर सकते।

मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते, यूहन्ना 15:5। हम आत्मा के द्वारा चलते हैं, गलातियों 5:16। आयत 25 से तुलना करें। लेकिन हम जो फल लाते हैं वह आत्मा का फल है।

दूसरे शब्दों में, हम मसीही जीवन में सक्रिय हैं, लेकिन इसके नीचे अनंत भुजाएँ हैं, जो न केवल हमें बचाए रखती हैं, बल्कि हमारे, पिता, पुत्र और आत्मा के माध्यम से फलदायी भी बनाती हैं। मूस इस तथ्य का सारांश देते हैं कि आश्वासन आंशिक रूप से ईश्वरीयता और पवित्रता की हमारी खोज पर आधारित है। उद्धरण, पॉल जोर देकर कहते हैं कि परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए जो किया है, वही हमारे अनंत जीवन का एकमात्र और अंतिम आधार है।

साथ ही वह उस जीवन को प्राप्त करने के लिए पवित्र जीवन जीने की अनिवार्यता पर जोर देता है। रोमियों 495 में मू कमेंट्री। यह खूबसूरती से कहा गया है।

कई साल पहले, मैं एक कक्षा में ये विषय पढ़ा रहा था, और वहाँ दो छात्र थे जो बहुत ही गैर-सुधारवादी पृष्ठभूमि से थे, जिन्होंने चार्ल्स होजेस की सिस्टेमेटिक थियोलॉजी पुस्तक पर अचानक ध्यान दिया था, और वे, हम कह सकते हैं, फिर से पैदा हुए थे। वे इन सत्यों पर सुधारवादी विश्वास

में परिवर्तित हो गए थे, जिनके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना था। और वे संघर्ष कर रहे थे लेकिन प्रगति कर रहे थे।

वे बहुत कुछ सीख रहे थे। स्पंज। और मैं अलग-अलग तरीके सिखा रहा हूँ, जैसा कि भगवान ने हमें आश्वासन दिया है, जैसा कि मैं यहाँ कर रहा हूँ।

और उन्होंने कहा, डॉक्टर, हमें एक ऐसा अंश मिला है जिसमें तीनों बातें हैं। अब, शायद इसका एक कारण मेरी धीमी बुद्धि है और दूसरा कारण यह है कि मैं सत्य के अलावा कुछ भी सिखाने में अनिच्छुक हूँ। मैंने उनकी बात सुनी और कहा, बेटा, यह दिलचस्प है।

लेकिन मैंने कहा कि मुझे इस बारे में और अधिक सोचने की ज़रूरत है। खैर, मैंने इस बारे में और अधिक सोचा। मैंने इसके बारे में कई बार लिखा है।

और यह उनमें से एक है। एक अनुच्छेद आश्वासन के तीन साधनों को जोड़ता है। मेरे नए सुधारित छात्र बिल्कुल सही थे।

यह सबसे अच्छा अंश है क्योंकि यह तीनों साधनों को एक ही पाठ में जोड़ता है, और उन्हें सबसे मददगार तरीके से एक दूसरे के साथ रखता है। परमेश्वर अपने बच्चों के प्रति अच्छा है। वह न केवल विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उन्हें बचाता है, बल्कि वह उन्हें यह भी आश्वासन देता है कि वह उनका है और वे उसके हैं।

वह ऐसा तीन तरीकों से करता है, मुख्य रूप से अपने वचन में उन्हें उद्धार का वादा करके। यही आश्वासन का स्थिर अंतर्निहित आधार है। कई बार, हम अपने भीतर की आत्मा को पर्याप्त रूप से महसूस या अनुभव नहीं कर पाते हैं।

और कभी-कभी, सच कहूँ तो, हमारा जीवन प्रोत्साहन नहीं बल्कि निराशा देता है। हमेशा नीचे अनंत बाहें होती हैं। हाँ, हम उन पापों का पश्चाताप करते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं।

और हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें आत्मा को महसूस करने में सक्षम बनाए। लेकिन इन सबके बावजूद, वचन दृढ़ रहता है। लेकिन वचन अकेला नहीं है।

परमेश्वर हमें अपनी आत्मा के द्वारा और हमारे द्वारा आध्यात्मिक फल उत्पन्न करके भी आश्वस्त करता है, जब हम उसकी खोज करते हैं और उसकी कृपा और आत्मा द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने की खोज करते हैं। उल्लेखनीय रूप से, रोमियों 5:1 से 10 में, हमारे उद्देश्यों के लिए, मैं रोमियों 5:1 से 5 कहूँगा, और फिर पद 10, आश्वासन के तीन साधनों को जोड़ता है। शास्त्र के आधार पर, पौलुस अपने पाठकों को उनके औचित्य और मेल-मिलाप में विश्वास दिलाता है।

जब उन्होंने मसीह पर भरोसा किया, तो परमेश्वर ने उन्हें धर्मी घोषित किया, रोमियों 5:1। हालाँकि वे परमेश्वर के शत्रु थे, फिर भी उसने मसीह के क्रूस के माध्यम से उन्हें अपने साथ मिला लिया। फिर, पद 10, यह इस प्रकार है कि जब वे धर्मी ठहराए गए, क्षमा करें, तो मेल-मिलाप होने पर वे उसके जीवन से कितना अधिक उद्धार पाएंगे? पद 10, बाइबल परमेश्वर के लोगों के लिए अंतिम

उद्धार की पुष्टि करती है, जिससे उन्हें वचन के वादे के माध्यम से आश्वासन मिलता है। यदि जब हम शत्रु थे, तब परमेश्वर ने हमें अपने साथ मिला लिया, तो मेल-मिलाप होने पर हम उसके जीवन से कितना अधिक उद्धार पाएंगे।

जैसा कि हमने देखा है, पवित्र आत्मा भी भविष्य की महिमा की मसीहियों की आशा की पुष्टि करने में एक भूमिका निभाता है। यह आशा हमें निराश नहीं करती, रोमियों 5 :5, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में डाला गया है, जो हमें दिया गया है, रोमियों 5:5। आत्मा हमें भीतर से आश्चर्य करती है कि परमेश्वर हमारा पिता हमसे प्रेम करता है और हमें बचाए रखेगा। वास्तव में, मैं इन बातों को संक्षिप्त भी करता हूँ क्योंकि पौलुस वचन पर आधारित दो तर्क देता है।

यह सब वचन है, लेकिन यहाँ वचन हमें आत्मा की ओर संकेत करता है, और यहाँ वचन हमें हमारे जीवन में काम करने वाले परमेश्वर की ओर संकेत करता है, लेकिन यह रोमियों 5:6 से 10 में औचित्य और मेल-मिलाप के तर्कों का उपयोग करता है, और वे इस प्रकार हैं। यदि जब हम दोषी ठहराए गए, तो परमेश्वर ने हमें उचित ठहराया, इसलिए, पद 9 में, अब हम उसके लहू, अर्थात् मसीह के लहू के द्वारा उचित ठहराए गए हैं, तो हम उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से और भी अधिक बचाए जाएँगे। यदि जब हम दोषी ठहराए गए, तो परमेश्वर ने हमें उचित ठहराया, अब जबकि उसने हमें उचित ठहराया है, तो वह हमें अंत तक बचाए रखेगा, और वह उसी तर्क को दोहराता है।

यह यहूदियों का तर्क है कि बड़े से छोटे की ओर, कठिन से आसान की ओर। परमेश्वर ने कठिन काम किया। उसने दोषी ठहराए गए पापियों को अपनी दृष्टि में धर्मी घोषित किया।

यह अविश्वसनीय है। अब, उन्हें धर्मी घोषित करने के बाद, श्लोक 9, वे परमेश्वर के क्रोध से कितने अधिक बचेंगे? हे भगवान। यह समझ में आता है।

उसने कठिन काम किया। वह आसान काम करेगा, और यह वही तर्क है जो पद 10 में औचित्य के चित्र से मेल-मिलाप की ओर स्थानांतरित होता है। पद 10 में, क्योंकि जब हम शत्रु थे, तब परमेश्वर ने कठिन काम किया, उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर गए, और भी अधिक, यह यहूदी प्रकार के तर्क का एक मौखिक संकेतक है, और भी अधिक, अब जबकि हम मेल-मिलाप कर चुके हैं, क्या हम उसके जीवन से बचाए जाएँगे? वैसे, पद 9 में लहू कूस का संदर्भ है। उसका जीवन पद 10 में यीशु के पुनरुत्थान का संदर्भ है, और हमें प्रायश्चित्त, कूस, मेल-मिलाप या पुनरुत्थान के लिए औचित्य को विभाजित नहीं करना है।

नहीं, वे दोनों हैं; मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान औचित्य और पुनरुत्थान, मेल-मिलाप दोनों का आधार है, लेकिन पॉल इसे इस तरह से विभाजित करता है। हर एक संपूर्ण का एक हिस्सा है। रक्त का अर्थ है रक्त और जीवन।

जीवन का मतलब खून और जीवन दोनों है। यहाँ भी वही तर्क है। अगर हम दुश्मन थे, तो परमेश्वर ने हमारे बीच सुलह करा दी।

अब जबकि हम मित्र हैं, अब जबकि हम परमेश्वर के मित्र हैं, हम मेल-मिलाप कर चुके हैं, हम निश्चित रूप से पुनर्जीवित मसीह द्वारा बचाए जाएंगे। यह परमेश्वर के वादों, परमेश्वर के वचन पर आधारित एक तर्क है। 5.5 पवित्र आत्मा के माध्यम से आश्वासन के लिए एक तर्क है, जो हमें दिया गया है, जो हमारे दिलों में परमेश्वर के प्रेम को उंडेलता है।

भीतर की आत्मा फुसफुसाती है, मानो वह हमें यकीन दिलाती है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। यह कभी भी वचन से अलग नहीं होता, लेकिन वचन के समान नहीं होता। वचन यहाँ है, यह साक्षी यहाँ है, और यह साक्षी उस साक्षी से सहमत है।

अर्थात्, परमेश्वर अपने वचन की सच्चाई के बारे में दृढ़ विश्वास स्थापित करता है, और वह हमें भीतर से आश्चस्त करता है, वचन में हमारे बाहरी आश्वासन से सहमत होता है। इतना ही नहीं, बल्कि आश्वासन के सभी तीन तरीके एक ही मार्ग में हैं। हमारे जीवन में परमेश्वर का कार्य भी आश्वासन को मजबूत करता है।

वास्तव में, इसे इस अंश में सबसे पहले रखा गया है। स्वर्ग के परमेश्वर के वादे के कारण, विश्वासी परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं। ओह, शायद मैंने ग़लत कहा।

पद 2 में स्वर्ग का वादा, यही वचन है। तो, आपके पास वचन है, फिर आपके पास परमेश्वर है जो हमारे जीवन में काम करके हमें आश्चस्त करता है, फिर आपके पास परमेश्वर है जो अपनी आत्मा के द्वारा हमें आश्चस्त करता है, पद 5, और फिर उसके बाद के पद दिखाते हैं कि परमेश्वर हमें फिर से वचन के द्वारा आश्चस्त करता है। तो, वचन इस अंश के आरंभ में और अंत में है।

वचन ने जीवन को बदल दिया, पवित्र आत्मा भीतर है, वचन फिर से, 3 से 4, बदले हुए जीवन से तर्क देते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि हम अपने कष्टों में भी घमंड करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि कष्ट धीरज पैदा करता है, धीरज सिद्ध चरित्र पैदा करता है, और सिद्ध चरित्र आशा पैदा करता है, 3 और 4। यहाँ, पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर हमारे जीवन को बदलकर हमें आश्चस्त करता है। वह एक जंजीर देता है, और कष्ट कष्ट, उत्पीड़न, पीड़ा और कष्ट की ओर ले जाता है। सही तरीके से जवाब देने से धीरज और स्थिरता पैदा होती है।

और अगर आप काफी समय तक स्थिर रहते हैं, तो आपका चरित्र बदल जाता है। कष्ट सहनशीलता पैदा करता है, एक सिद्ध चरित्र पैदा करता है, और उससे आशा पैदा होती है। जब मसीही कष्टों का जवाब ईश्वर-सम्मानपूर्ण तरीके से देते हैं, तो ईश्वर उनमें सहनशीलता पैदा करता है।

यदि वे ऐसा अक्सर करते हैं, तो यह जीवन का एक पैटर्न बन जाता है, और परमेश्वर उनके चरित्र को बदल देता है ताकि वे स्थिर व्यक्ति बन जाएं। और पॉल, हमें पंक्तियों के बीच पढ़ना चाहिए। वह हमें यह नहीं बताता कि चरित्र परिवर्तन कैसे आशा पैदा करता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि पंक्तियों के बीच पढ़ना मुश्किल है, और टिप्पणियाँ इन विचारों से सहमत हैं।

जब वे ईश्वर को इन तरीकों से, उन तरीकों से जो वे देख सकते हैं, अपने अंदर काम करते हुए देखते हैं, तो इससे ईश्वर के उन तरीकों से काम करने के प्रति उनका भरोसा और मजबूत होता है

जिन्हें वे नहीं देख सकते। हमारे जीवन में अभी और यहीं ईश्वर को काम करते हुए देखना, यहाँ तक कि उन्हें ईश्वरीयता की ओर बदलना, भविष्य में उनके काम करने के प्रति हमारे विश्वास को मजबूत करता है। खुद को उद्धृत करते हुए।

क्षमा करें, मुझे यह नहीं पता था। हम जो देख सकते हैं उसमें परमेश्वर का कार्य, जो हम नहीं देख सकते हैं उसके लिए आशा उत्पन्न करता है। रोमियों 5 फिर परमेश्वर के वचन, आत्मा की आंतरिक गवाही को चित्रित करता है, और परमेश्वर द्वारा विश्वासियों को उनकी स्वर्गीय आशा का आश्वासन देने के तरीकों से जीवन को बदलता है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम धर्मत्याग की कठिन बाइबिल शिक्षा पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 19, संरक्षण और दृढ़ता, भाग 3, व्यवस्थित सूत्रीकरण, आश्वासन है।